5 28 Apr

Date __/__/____

भी प्रतिबंधित हो जाता है।

d. वह अपनी सम्पत्ति या अपने परिवार के उत्पाद को बेचने का हक भी खो बैठता है। वह कर्ज दाता की शर्तों के अनुसार पूर्ण या आंशिक रूप से बल पूर्वक अपना श्रम देने को मजबूर होता है। कर्ज दाता की शर्तों में यह शामिल होता है कि कर्ज न चुकाने पाने की स्थिति में वह कर्जदार के रूप में बंधुआ मजदूरी करेगा।

अतः यह स्पष्ट है कि बंधुआ मजदूरी को जिस प्रकार परिभाषित किया गया है वह एक प्रकार से 'दासता' का उदाहरण है। कर्ज के चलते बंधुआ मजदूरी, भूमिहीन खेतिहार मजदूरों, ईंट-भट्टे पर लगे कामगारों, पत्थर तोड़ने वाले मजदूरों, कपड़ों के लूम पर काम करने वालों एवं अन्य में अधिक प्रचलित है। खेतिहार मजदूरों में अधिकांशतः भूमिहीन एवं किसान मजदूर इससे प्रभावित है। सामाजिक, आर्थिक कुरीतियों के चलते समाज का अछूत और पिछड़ा वर्ग अनुसूचित जातियाँ और जनजातियाँ इससे सर्वाधिक प्रभावित है। नदीम हसनैन (1981) ने अपने महत्वपूर्ण सर्वेक्षण कार्य में देहरादून, गढ़वाल, उत्तर काशी के मजदूरों में गहन अध्ययन के बाद बंधुआ मजदूरी और शोषण के समीकरणों को स्पष्ट किया था। प्रतीय प्रथाओं के मुताबिक उत्तर काशी के कोल्टा अछूत होने के कारण भूमि के स्वामी नहीं हो सकते थे। सामाजिक कु-प्रथाओं के चलते वे सोने को भी छू नहीं सकते और न अपने पास रख सकते थे। ऐसे में किसी आर्थिक कठिनाई के समय उनके पास जमीन है न पैसा, ऐसे में उसके शरीर और मजदूरी को आसानी से बंधक बनाया जा सकता है।

बंधुआ मजदूरी का सबसे खराब पहलू यह है कि वर्तमान में यह हरित क्रांति के क्षेत्रों पंजाब और हरियाणा में सर्वाधिक प्रचलित है जहाँ प्रवासी मजदूरी आसानी से बंधुआ मजदूरी के जाल में फंस जाते हैं। प्रशासनिक और कानूनी कदमों के उठा-

Page No.